टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने गुजरात सरकार के साथ शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं को सशक्त बनाने के लिए एमओयू पर हस्ताक्षर किए

गुजरात, टोयोटा किर्लोस्कर मोटर ने आज गुजरात सरकार के साथ पूरे राज्य में शिक्षा और स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता को बेहतर बनाने के लिए एक मेमोरेंडम ऑफ़ अंडरस्टैंडिंग पर हस्ताक्षर किए। यह व्यापक पहल ज़रूरकी सतत सामुदायिक विकास के प्रति अटूट प्रतिबद्धता और लोगों के जीवन में स्थायी बदलाव लाने के संकल्प को दर्शाती है।

एमओयू पर हस्ताक्षर भारत सरकार के माननीय गृह मंत्री श्री अमित शाह, गुजरात के माननीय मुख्यमंत्री श्री भूपेंद्रभाई पटेल, वरिष्ठ सरकारी अधिकारियों, श्रीमती गीतांजलि विक्रम किर्लोस्कर (चेयरपर्सन एवं मैनेजिंग डायरेक्टर, किर्लोस्कर सिस्टम्स प्रा. लि.), श्री विक्रम गुलाटी, कंट्री हेड एवं एक्जिक्यूटिव वाइस प्रेसिडेंट, कॉर्पोरेट अफेयर्स एंड गवर्नेंस, TKM, श्री सिमंत अरुण ,वाइस प्रेसिडेंट, वेस्ट रीजन, सेल्स-सर्विस-यूज्ड कार, TKM तथा टोयोटा किर्लोस्कर मोटर के अन्य वरिष्ठ नेतृत्व की उपस्थिति में किए गए। विस्तृत विज़न के अंतर्गत पहुँच, समावेशिता और दीर्घकालिक विकास को मज़बूत बनाने के उद्देश्य से TKM की पहल सामुदायिक लर्निंग, डिजिटल शिक्षा और ग्रामीण स्वास्थ्य सेवाओं के इंफ्रास्ट्रक्चर में लक्षित हस्तक्षेपों को एक साथ लाती है। इसके तहत सामुदायिक पुस्तकालय, मोबाइल कंप्यूटर शिक्षा, एडवांस्ड टेक्निकल ट्रेनिंग और महत्वपूर्ण मेडिकल उपकरण सहयोग जैसी सुविधाएँ प्रदान की जा रही हैं।

इस पहल के हिस्से के रूप में, TKM ने सामुदायिक पुस्तकालयों की स्थापना में योगदान दिया है, जिन्हें एक सुलभ लर्निंग वातावरण के रूप में डिज़ाइन किया गया है ताकि शुरुआती पढ़ने की आदतों को विकसित किया जा सके। सोच समझकर डिज़ाइन किए गए स्पेस में एयर कंडीशनर, CCTV सर्विलांस और सोलर पावर सप्लाई जैसी सुविधाएँ उपलब्ध कराई गई हैं। यह व्यवस्था सभी आयु वर्ग के 3 लाख से अधिक शिक्षार्थियों के लिए आरामदायक और टिकाऊ वातावरण सुनिश्चित करती है।

डिजिटल शिक्षा तक पहुँच को और विस्तारित करते हुए, TKM ने सूरत के ग्रामीण क्षेत्रों के छात्रों के लिए मोबाइल कंप्यूटर एजुकेशन इलेक्ट्रिक बस की शुरुआत की है। इस बस को विशेष रूप से कंप्यूटर शिक्षा और आवश्यक डिजिटल स्किल्स प्रदान करने के लिए डिज़ाइन किया गया है। इस पहल का उद्देश्य छात्रों में डिजिटल टूल्स के प्रति परिचय और ज्ञान को मज़बूत करना है, ताकि भविष्य की शैक्षणिक प्रगति और अवसरों की नींव रखी जा सके। यह मोबाइल बस सूरत जिले के पाँच ब्लॉक्स को कवर करेगी और लगभग 8,000 छात्रों को लाभ पहुँचाएगी।

जैन श्रीसंघ की आम सभा 1 जून को

बाड़मेर 28.05.2026। जैन श्रीसंघ, बाड़मेर के कार्यों की जानकारी देने एवं संघ हित के सुझाव लेने को लेकर 01 जून सोमवार रात्रि 8:30 बजे स्टेशन रोड स्थित जैन भोजनशाला में जैन समाज बाड़मेर की आमसभा रखी गई है।

जैन श्रीसंघ के महामंत्री किशनलाल वडेरा ने बताया कि संघ के विधान की अनुपालना में जैन श्री संघ बाड़मेर की आमसभा 01 जून 2026 सोमवार को रात्रि 8:30 बजे जैन भोजनशाला स्टेशन रोड में आयोजित होगी। जिसमें श्रीसंघ के विविध कार्यों की जानकारी देने के बाद संघ हित के सुझाव लिये जायेंगे। इस आमसभा में बाड़मेर जैन समाज के सभी सदस्य, नागरिक सादर आमंत्रित है।

नवतपा की तपिश और लू के थपेड़े, समझदारी ही है सबसे बड़ा बचाव

ज्येष्ठ मास की शुरुआत होते ही उत्तर और मध्य भारत में 'नवतपा' का आगाज़ हो जाता है, जब सूर्य पृथ्वी के सबसे नज़दीक होने के कारण हवा में आग घोलने लगता है और इस झुलसा देने वाली गर्मी में चलने वाली तीखी 'लू' सिर्फ़ असहज नहीं करती, बल्कि शरीर को बुरी तरह बीमार और पस्त कर सकती है.

इस भीषण दौर में थोड़ी सी भी लापरवाही सेहत पर भारी पड़ सकती है, इसलिए इस मौसम का सामना केवल समझदारी और कड़े बचाव से ही किया जा सकता है. लू के इन जानलेवा झटकों से बचने का सबसे अचूक हथियार शरीर में नमी बनाए रखना है; भले ही प्यास न लगी हो, फ़िर भी हर आधे घंटे में पानी पीते रहना चाहिए और आम का पन्ना, जौ का सत्तू, पुदीने का शरबत, नींबू-पानी, छाछ तथा नारियल पानी जैसे पारंपरिक, शीतल व प्राकृतिक पेयों को अपने दैनिक आहार में शामिल करना चाहिए. इसके साथ ही, दोपहर बारह बजे से शाम चार बजे के बीच, जब सूरज के तेवर अपने चरम पर होते हैं, अनावश्यक रूप से बाहर निकलने से बचें और यदि बाहर जाना बेहद अनिवार्य हो, तो सूती व ढीले-ढाले हल्के रंग के कपड़े पहनकर, सिर को अंगोछे या टोपी से ढककर और आँखों पर धूप का चश्मा लगाकर ही निकलें. खाली पेट धूप में बाहर जाना सीधे बीमारी को बुलावा देना है, इसलिए हमेशा कुछ खाकर और पानी पीकर ही घर से क़दम बाहर बढ़ाएं,यदि धूप से लौटने के बाद अत्यधिक सिरदर्द, चक्कर, कमज़ोरी, जी मिचलाना या तेज़ बुखार के बावजूद पसीना न आने जैसे लक्षण दिखाई दें, तो इन्हें कतई नजरअंदाज न करें,ऐसे पीड़ित व्यक्ति को तुरंत किसी छायादार या ठंडी जगह पर ले जाकर गीले कपड़े से स्पंजिंग करें, ओआरएस (ORS) का घोल या नमक-चीनी का पानी दें और स्थिति गंभीर होने पर बिना देर किए चिकित्सक से परामर्श लें. इस आत्म-रक्षा के साथ-साथ एक सामाजिक और मानवीय समझदारी यह भी है कि इस भीषण गर्मी में बेज़ुबान पशु-पक्षियों का भी विशेष ख़याल रखा जाए, अपनी छतों, बालकनियों या घर के बाहर मिट्टी के सकोरों में साफ़ पानी रखें और गली के आवारा पशुओं को दोपहर की चिलचिलाती धूप में किसी पेड़ या दीवार की छाया में सुस्ताने दें, उन्हें वहां से भगाएं नहीं. अंततः नवतपा का यह दौर हर साल हमें तपाने आता है, परंतु संयमित खान-पान, उचित परहेज और जागरूक सतर्कता अपनाकर हम इसके थपेड़ों को बेअसर कर ख़ुद को और अपने परिवार को पूरी तरह सुरक्षित रख सकते हैं

▶ डॉ. आरजू अहमद
शाह मगरुधा हरदा
मध्य प्रदेश

हरियाणा एवं हरियाणवी संस्कृति को प्रतिबिम्बित करता

हरियाणवी ग़ज़ल–संग्रह गुल्लर के फूल

आदरणीय कंवल हरियाणवी जी हरियाणवी के प्रथम ग़ज़लकार माने जाते हैं 1988 ई0 में प्रकाशित इनके हरियाणवी ग़ज़ल-संग्रह ' तारे नवे नवे से ' - को हरियाणवी के प्रथम ग़ज़ल-संग्रह के रूप में जाना जाता है। उनकी गिनती हरियाणा के कैथल जनपद के प्रतिनिधि ग़ज़लकारों में होती है कैथल जनपद में कंवल हरियाणवी की हरियाणवी ग़ज़ल-परम्परा को रिसाल जांगड़ा,रामफल गौड़,कँवर कसौरिया और कर्म चंद ' केसर ' ने आगे बढ़ाया है।

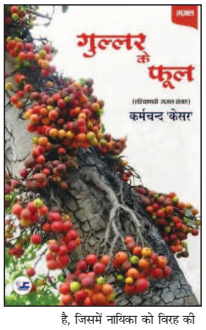

18 अगस्त 1969 ई0 को जन्मे कर्म चंद ' केसर ' एम0 ए, बी0 एड0 हैं और शिक्षा विभाग,हरियाणा में हिंदी प्राध्यापक के रूप में अपनी सेवायें दे रहे हैं।इनका संबंध हरियाणा के कैथल जिले की गुहला तहसील के गाँव कसौर से है।गाँव कसौर के ही वरिष्ठ शायर कँवर कसौरिया इनके साहित्यिक गुरु हैं।इनकी शागिर्दगी में कर्म चंद ' केसर ' की हरियाणवी ग़ज़लों में निखार आया है।

वे ग़ज़ल और हरियाणवी साहित्य-संस्कृति आदि से संबंधित हर विषय में अपने उस्ताद कँवर कसौरिया जी से मार्ग-दर्शन प्राप्त करते रहते हैं।अपने उस्ताद के अतिरिक्त वे हरियाणवी जानने वाले साहित्यकारों से भी हरियाणवी शब्दों,मुहावरों और लोकोक्तियों को लेकर गहन चर्चा करते हैं।प्राचीन एवं परंपरागत हरियाणवी शब्दों को ढूँढते हैं,खोजते हैं,उन्हें भली-भाँति समझते हैं और उन शब्दों को अपनी ग़ज़लों में प्रयोग करते हैं। कर्म चंद ' केसर ' की हरियाणवी ग़ज़लें विभिन्न पत्र-पत्रिकाओं में प्रकाशित होती रहतीं हैं।

वे निरंतर कवि-सम्मेलनों और काव्य-गोष्ठियों में सहभागिता करते रहते हैं।उनकी ग़ज़लों को सुनकर सामान्य पाठक,ग़ज़ल की समझ रखने वाले साहित्यकार एवं समीक्षक,उनकी प्रशंसा किये बिना नहीं रह सकते।कर्म चंद ' केसर ' के अब तक दो हरियाणवी ग़ज़ल-संग्रह प्रकाशित हो चुके हैं।पहला हरियाणवी ग़ज़ल-संग्रह ' कुणक ' नाम से है।

दूसरा हरियाणवी ग़ज़ल-संग्रह ' गुल्लर के फूल ' - है।यूनिक पब्लिशर्स,कुरुक्षेत्र (हरियाणा) से प्रकाशित इस हरियाणवी ग़ज़ल-संग्रह के संस्करण-2026 को मुझे पढ़ने का अवसर मिला।यह ग़ज़ल-संग्रह हरियाणा साहित्य अकादमी,पंचकूला(हरियाणा) की पुस्तक-प्रकाशनार्थ प्रोत्साहन योजना, वर्ष 2021 के अंतर्गत प्रकाशनार्थ चुना गया था।हरियाणवी ग़ज़ल-संग्रह ' गुल्लर के फूल ' का प्राक्कथन हरियाणा साहित्य अकादमी,पंचकूला (हरियाणा) के तत्कालीन निर्देशक डॉ0 चंद त्रिखा ने लिखा है। इसी ग़ज़ल-संग्रह में उस्ताद शायर कँवर कसौरिया की खरी-खरी भूमिका है।

इस ग़ज़ल-संग्रह के 127 पृष्ठों में कुल 81 ग़ज़लें समाई हुई हैं।मानवीय संवेदनायें, ग़ज़लों के विभिन्न शेरों में उतरी हैं। ग़ज़लों के शेरों में किसान की दुर्दशा पर चिंता प्रकट की गई है।पर्यावरण और लुप्त हो रहे पक्षियों के प्रति सद्भावना को ग़ज़लों के शेरों का विषय बनाया गया है।

ग़ज़लों के शेरों में देश-भक्ति का एहसास भी है।बचपन की स्मृतियाँ भी हैं।प्राकृतिक सौंदर्य भी दृष्टि-गोचर होता है। इश्क़ के बारे में कर्म चंद ' केसर ' के ख़याल हैं।हरियाणवी बोली,संस्कृति, परंपराओं, वाद्य-यंत्रों, सांगियों, साहित्यकारों, एवं जीवन-शैली के प्रति अनुराग है।जीवन-दर्शन है।व्यवस्था पर टिप्पणियाँ हैं। अपनी हरियाणवी ग़ज़लों के शेरों के माध्यम से वे समाज में व्याप्त व्यसनों को छोड़ने का,युवा वर्ग से आह्वान करते हैं।

इस संग्रह की ग़ज़लों में अनेक नेक परामर्श दिये गये है।प्रेम को लेकर लोगों के दृष्टिकोण प्रस्तुत किये गये हैं।मानव द्वारा प्रकृति को पहुँचाई गई क्षति को इंगित किया गया है।सामाजिक कुरीतियों के ज्यों के त्यों बने रहने पर चिंता प्रकट की गई है।इस ग़ज़ल-संग्रह में पाठकों को अनेक व्यंग्यात्मक शेर पढ़ने को मिलेंगे।कुछ शेरों में माँ को भी स्थान मिला है।कुछ शेरों में अतीत की सुखद यादें भी हैं।

जमाने को देखने के बाद कर्म चंद ' केसर ' इस नतीजे पर पहुँचते हैं :- झुठ्ठा सबका प्यार,जमाना देख लिया। सब मतलब के यार,जमाना देख लिया। '(पृष्ठ 26)।कर्ज में दबे किसान की आर्थिक बदहाली को वे अपनी ग़ज़ल के मतले में इस प्रकार बयान करते हैं :- ' डाँग्गर,बच्छड़,बाड़ा,खेत-खल्याड़ बिक्याऊ सै।दबी पड़ी सै करज तळै याह जान बिक्याऊ सै। '(पृष्ठ 31)।

जैसा कि पूर्व में कहा गया है कि ' गुल्लर के फूल '-ग़ज़ल-संग्रह की ग़ज़लों में प्राकृतिक सौंदर्य के दर्शन होते हैं। इस प्राकृतिक सौंदर्य की झलक आप भी देखिये :- ' तैर रही मुरगाई रात चाँदणी मैं। झूम रही मस्ती मैं, छेड़या राग पाणी मैं। '(पृष्ठ 33)।

मनुष्य द्वारा प्राकृतिक संसाधनों को दूषित किया जा रहा है।प्राकृतिक संसाधन के रूप में जल के प्रदूषण की समस्या को लेकर वे अपनी ग़ज़ल के एक शेर में कहते हैं :-' होया काळ्य बदळ् मारै इमरत जहर बण्या, साब्बण की-सी उठण लागयीं झाग पाणी मैं। '- पृष्ठ 33)।आजकल लोग अपने झगड़ों को लेकर न्यायालयों के चक्कर काट रहे हैं।अपना समय, धन,मन का चैन- खो रहे हैं।इस स्थिति में ग़ज़लकार 'केसर' का मानना है :-' कचैहड़ी मैं बस हार-जीत हो,न सुळझै मसले घर के,दस भाई मेल करा दें, वा सुलह-सफाई एक तरफ। '(पृष्ठ 37)।पंचायती फ़ैसलों का तो कहना ही क्या!' गुल्लर के फूल '- ग़ज़ल-संग्रह में हरियाणवी संस्कृति के कई रूप देखने को मिलते हैं।घड़वा,बैंजू , बीन,ढोल,तुंतरा, बाज्जा,पितली और बाँसुरी के रूप में हरियाणवी वाद्य-यंत्रों का संगीत सुनाई देता है।हंस,बाजरे,बाड़ी, धान और गेहूँ की फ़सल लहलहाती दिखाई देती है।हरियाणवी खाने-पीने में हलवा,पूरी,खीर,सतपकवान्नी,सी र ा ब ड़ ी ,ख च ड़ ी, दलिया,चूरमा,दूध और कसार का स्वाद महसूस होता है।

पशु,खेत,बाड़े, खलिहान और हल के रूप में किसान की सम्पत्ति दिखाई देती है।बान्ने और भात के रूप में हरियाणा के ब्याह-शादियों की झलक है।एक झलक आप भी देख लीजिये:-' बनड़ा बान्ने बेठ्या बड़्या, गीत खुशी के गाण लागयीं। '(पृष्ठ 52)।हरियाणा की वनस्पति के रूप में टींड,सांगरी,गुल्लर,नाप्पे,पिंजू , पील, कैर, जाँड और जाळ आदि का ज़िक्र है। मंदिर,खेड़े, पीर, ड़ेरे, धूने- हरियाणा की धार्मिक एवं आध्यात्मिक तस्वीर पेश करते हैं।सल्लूमण, दूज और कोथली के रूप में हरियाणा के त्योहारों की छटा है।हरियाणा के लोक कवियों और सांगियों को भी इस ग़ज़ल-संग्रह में याद किया गया है।इनमें बाजे भगत,साधू गम,राम किशन ब्यास, धनपत व मांगेराम के नाम मुख्य हैं।आज के हरियाणा में ऐसे लोक कवियों और सांगियों की कमी,कर्म चंद ' केसर ' ने महसूस की है और उन्होंने अपनी ग़ज़ल के एक शेर में कहा है :-' बाजे,ब्यास अर लखमी,साधू ,

धनपत,मांगेराम रह्यो ना। '(पृष्ठ 110)।कुश्ती और चंदगी राम के रूप में हरियाणवी खेल और खिलाड़ी की चर्चा है। हरियाणवी साहित्य को अपने रचना-कर्म से समृद्ध करने में अपना योगदान देने वाले हरियाणवी साहित्यकारों- कंवल हरियाणवी,कँवर कसौरिया,रिसाल जांगड़ा,रामफल गौड़ और मंगत राम का उल्लेख है।देखिये कर्म चंद ' केसर ' की ग़ज़ल का यह शेर :-' कँवर, कंवल, रिसाल, रामफळ, मंगत नै, छंद बणा गजलां मैं ढाळै बड़े-बड़े। '(पृष्ठ 122)।कर्म चंद ' केसर ' जी आजकल के लोगों की मानसिकता से भली-भाँति परिचित हैं।वे जानते हैं कि बिना स्वार्थ के कोई किसी को मुँह नहीं लगाता।तभी तो वे कहते हैं :-' बुला-बुला का प्यावै सै जो ' केसर ' नैं,सब मतलब की लीएँ पिट्यारी बेट्ठे सैं। ' (पृष्ठ 46)।कटते-घटते वृक्षों के कारण पक्षियों के व्यवहार में भी अंतर आ गया है।वे अपनी स्वभाविक प्रकृति को त्याग रहे हैं।देखिये उदाहरण:- ' घुग्घी, गुरसल, तोते, चिड़िया कड़े गये, कोयल नैं बी गाणा,गाणा छोड़ दिया। '(पृष्ठ 55)।

भारत विश्व-पर्यटन का एक प्रमुख केंद्र है।काफ़ी संख्या में अलग-अलग देशों से सैलानी यहाँ पर्यटन के लिये आते हैं। तभी तो कर्म चंद ' केसर ' कहते हैं :-' देस मेरा सै फूल बगीच्चा,दुनियाँ सैर करण नै आवै। ' (पृष्ठ 70)।कर्म चंद ' केसर ' जी अपनी ग़ज़लों के शेरों में स्वास्थ्य-संबंधी परामर्श भी देते हैं।एक परामर्श आपके लिये भी है :'- ' जादा खाणा ठीक नहीं सै।खाके न्हाणा ठीक नहीं सै। '(पृष्ठ 80)।

ग़ज़ल-संग्रह ' गुल्लर के फूल '- में श्रृंगार-परक ग़ज़लें भी हैं।श्रृंगार के वियोग पक्ष का एक शेर,नमूने के तौर पर हाजिर है, जिसमें नायिका को विरह की स्थिति में श्रृंगार अच्छा नहीं लगता।वह कह उठती है :-' सिंगर-डोर कै देक्ख्या नहीं,तेरे बिछुड़े मैं,सुरखी,बिंदी,

सुरमा रह्यो बेकार जोबन मैं। '(पृष्ठ 81)।कर्म चंद ' केसर ' की ग़ज़लों में व्यंग्य भी देखने को मिलता है।आप भी देखिये :- इस तरियाँ तै राक्ख्या मेरा ख्याल उनैं।मैं कर दिया बिमार पूछकै हाल उनै। ' पृष्ठ 90)। आजकल की मित्रता पर व्यंग्य का नमूना भी देखते चलिये :-' समझूँ था जिसनै आपणे दिलदार की तरियाँ। बदल गया सै यार मेरा सरकार की तरियाँ। '(पृष्ठ 106)।इन सबके अतिरिक्त कर्म चंद ' केसर ' के ग़ज़ल-संग्रह ' गुल्लर के फूल ' में समाज में बुजुर्गों की स्थिति,राम-राज की प्रतीक्षा,खान-पान में परिवर्तन,व्यवस्था,शासकों से शिकायत,नश्वरता,जीवन में भाग-दौड़,जात-पात क़ानून की प्रभावहीनता, चिट्ठियों की स्मृतियाँ,माँ की स्मृति व अतीत की यादों को लेकर खूबसूरत शेर कहे गये हैं।

हरियाणवी ग़ज़ल-संग्रह ' गुल्लर के फूल '- की भाषा हरियाणवी संस्कृति का प्रतिनिधित्व करती है।इसमें सामान्य बोलचाल के हिंदी,उर्दू और अंग्रेज़ी भाषा के शब्द प्रयुक्त हुए हैं। इनके अतिरिक्त इन ग़ज़लों में हरियाणवी के वे शब्द भी हैं जो ग़ज़लकार द्वारा अपने दैनिक क्रियाकलापों के दौरान सुने और खोजे गये।इनमें ' सवास्सण ', ' ओग ',' रेई ',' मेढ़ ',' बदफैल्ली ', ' रेविया-स्वाहल ' व ' दरब ' - मुख्य हैं। गज़लकार कर्म चंद ' केसर ' की इस खोज-परक प्रवृत्ति को लेकर कहा जा सकता है :- ' लिखे लफ्ज अपणी बोल्ली के, गाळ्यें मैं तै टोल्है उसनैं। '(पृष्ठ 97)।ग़ज़लों में ' रेता-रुता बजरी-बुजरी पत्थर-पात्थर ', - धाक्कड़-धुक्कड़ अफसर-उफसर ' लीडर-लाडर तोते-तुते 'तथा चील-चूल ' - जैसे सार्थक और निरर्थक शब्दों की खूबसूरत युगलबंदी भी देखने को उपलब्ध है।' मुँह फुल्लाणा पाई-पाई जोड़णा सिर का ताज बणना दस नौहवां की कमाई करणा थूक बलोणा सुख कै डिक्खर होणा सीस्सा दिख्याणा ' , ' दूर भरणा कांछ बजाणा ' और ' सुख कै गुलबांस्सा होणा '- जैसे हरियाणवी मुहावरों ने ग़ज़लों के सौंदर्य में वृद्धि की है। हरियाणवी लोकोक्तियों के रूप में - ' सूत्या पड़्या आदमी,मर्या बराबर काणी गई तलाकण आई ' , ' के न्हावै, के नचड़ै ' व ' घर का भेदी,लंका ढावै '- जैसी लोकोक्तियों ने संग्रह की ग़ज़लों में अपना गहरा प्रभाव छोड़ा है।

कर्म चंद 'केसर ' के हरियाणवी ग़ज़ल-संग्रह ' गुल्लर के फूल ' में अलंकारों की छटा भी बिखरी दिखाई पड़ती है।अलंकारों में ईख,बाजरा,बाड़ी तथा कणक के समूह-रूप में होने से समुच्चय अलंकार मानवीकरण अलंकार कुंगर कै-कै करयां ' केसर ' - इस पंक्ति में ' क ' वर्ण की आवृत्ति के कारण ' वृत्यानुप्रास अलंकार ', मतले के दोनों मिसरों में तथा शेरों व मक्तों के दूसरे मिसरों में क़ाफ़िया-रदीफ़ के पालन के कारण ' अन्त्यानुप्रास अलंकार ' , उपमा (हरियाणवी उपमा-खरबुज्जे सी कुरती), ' करदा-करदा ' , ' मरदा-मरदा ' आदि में शब्दों की पुनरावृत्ति के कारण ' पुनरुक्तिप्रकाश अलंकार ' , ' एक-दूसरे के विपरीत क्रिया होने के कारण ' विषादन अलंकार ' और उपनाम ' केसर ' के साथ-साथ, ' केसर ' शब्द ' कुंकुम ' अर्थ भी दे रहा है।देखिये शेर :- ' बीर-मरद का मेल मिलै जद, झाड़ी केसर-क्यारी होज्या। '(पृष्ठ 125)।इस कारण 'श्लेष अलंकार ' मुख्य है।

कुल मिलाकर कर्म चंद ' केसर ' के हरियाणवी ग़ज़ल-संग्रह ' गुल्लर के फूल '- की ग़ज़लें हरियाणवी संस्कृति और हरियाणा प्रदेश का प्रतिबिंब हैं।यह ग़ज़ल-संग्रह पूरी तरह से हरियाणवी संस्कृति को समर्पित है।हरियाणवी ग़ज़ल विधा को समर्पित है।आशा है कि इस हरियाणवी ग़ज़ल-संग्रह को पाठकों,साहित्यकारों, समीक्षकों, साहित्यप्रेमियों, हरियाणा व हरियाणवी के लाडले-लाडलियों का भरपूर स्नेह मिलेगा।

▶ डॉ0 तेजिंद्र,
882, सेक्टर 19, भाग दो
हुडा कैथल (हरियाणा)
पिन : 136027 मोबाइल
नम्बर : 9416658454

करुणा दिवस पर सामूहिक आयंबिल तप आराधना संपन्न

महिदपुर।जवाहर डोसी पीयूष। जैन सोशल ग्रुप(मेन)महिदपुर के तत्वावधान में करुणा दिवस पर सामूहिक आयंबिल तप की आराधना शांतिनाथ आराधना भवन महिदपुर सिटी में संपन्न हुई।

जिनशासन गौरव पूज्य आचार्य श्री उमेश मुनिजी म.सा के सुशिष्य धर्मदास गणनायक प्रवर्तक देव पू. जिनेन्द्र मुनिजी म.सा.की सुशिष्या प.पू. संयमप्रभाजी म.सा आदि ठाणा 12 तथा गच्छाधिपति प.पू.आचार्य श्री नरदेवसागर सूरीश्वरजी म.सा.की आज्ञानुवर्तनी प.पू. शीलरेखाजी म.सा.आदि ठाणा 7 एवं प.पू. मुक्तिप्रिया श्रीजी म.सा.आदि ठाणा 2 की पावन निश्रा में तप आराधना संपन्न हुई जिसमें 108 आराधकों ने आयंबिल तप की आराधना की।आयंबिल तप आराधना के लाभार्थी श्रीमती निर्मलाबेन मानमल शैलेष कुमार कोचर परिवार महिदपुर रहे।सभी 108 आयंबिल तपस्वियों का बहुमान जैन सोशल ग्रुप (मेन) महिदपुर द्वारा नगर में वर्षातप आराधना भी करवाई जा रही है जिसमें 108 वर्षातप आराधक 14 माह तक आराधना कर रहे हैं। वर्षातप आराधकों के पारणे की सुंदर व्यवस्था लाल मंदिर महिदपुर में जैन सोशल ग्रुप महिदपुर के तत्वावधान में जेएसजी वर्षातप आराधना समिति द्वारा की जा रही है।

आत्म चिंतनः बस! मनुष्य में मनुष्यता बनी रहें

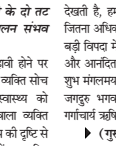

यदि स्वास्थ्य पर स्वाद हावी होने लगे तो निश्चित मानकर चलिए जिसेगी रहने के अवसर धीरे-धीरे समाप्त होते चले जाएंगे, कारण कि स्वाद व स्वास्थ्य नदी के दो तट हैं जिनका कभी मिलन संभव नहीं है.

व्यक्ति पर स्वाद हावी होने पर मनवांछित भोजन से पेट व्यक्ति सोच नहीं पाता है, वहीं स्वास्थ्य को प्राथमिकता पर रखने वाला व्यक्ति अपना भोजन भी स्वास्थ्य की दृष्टि से करने लगता है। भक्ति में वह शक्ति है जो पत्थर को भी भगवान बना देती है, मानवता का भाव जगा कर मनुष्य को भी मनुष्य बना देती है, जगत के कण-कण में भक्ति की असीम शक्ति विद्यमान है, हृदय में बसते ईश्वर को जब संतान माता पिता में प्रभु का रूप देखती है, हमारा संबंध परमात्मा से जितना अधिक गहरा होगा... उतनी ही बड़ी विपदा में भी हम सुरक्षित, सुखी और आनंदित रहेंगे। आपका हर दिन शुभ मंगलमय हो ऐसी कामनाएं। जय जगद्गुरु भगवान महामुनि महर्षि श्री गर्गाचार्य ऋषि।

▶ (गुरू) सूबेदार रावत गर्ग
उण्डू (राज)
श्री हरि विष्णु कृपा, श्री गर्गवास
राजबेरा, राजस्थान